प्रात:क्लास 30-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। भक्ति-मार्ग के सतसंगों से यहजो ज्ञान मार्ग का सतसंग है यह है बिचित्र। वहां तो जाकर साधू सन्त आद के सामने बैठते हैं कि रामायण वशिष्ट आद सुने। तुमको भक्ति का अनुभव तो है। जानते हो अनेकानेकसाधू सन्त भक्ति-मार्ग के शास्त्र आद सुनाते हैं। यहां तो बिलकुल ही उन से अलग है। यहां तुम किसके सामने बैठे हो? डबल बाप और मां। वहां तो ऐसे नहीं हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप भी है। कई अपने लौकिक बाप को भी ले आते हैं। तो लौकिक बाप भी रहता, पारलौकिक बाप भीरहता, अलौकिक बाप भी रहता। ममा भी रहती, बड़ी ममा कहो छोटी ममा कहो। इतने सब सम्बन्ध हो जाते हैं। वहां तो ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं। न वह कोई फलोअर्स ही हैं। वह तो है निवृति मार्ग। उसका धर्म ही अलग है। रात-दिन का फर्क है। यह भी तुम जानते हो लौकिक बाप से अल्प काल क्षण भगुंर एक जन्म लिए मिलेगा। फिर नया बाप नई बात। यहां तो अलौकिक भी है पारलौकिक भी है। लौकिक से भी वर्सा मिलता है पारलौकिक से भी वर्सा मिलता है। बाकी यह अलौकिक बाप है वन्डर-फुल। इन से कोई भी वर्सा नहीं मिलता। हां इनके द्वारा शिव बाबा देते हैं। इसलिए इस पास अलौकिक बाप को भी याद करते हैं। लौकिक को भी करते हैं। बाकी इस अलौकिक(ब्रहमा)बाप को कोई भी याद नहीं करते। तुम बच्चे जानते हो यह गो है प्रजापिता। यह कोई को पता नहीं हैं। प्रजापिता ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर है। शिव बाबा को ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर नहीं कहते। लौकिक सम्बन्ध में लौकिक फादर और ग्रेन्ड फादर होते हैं। यह तो है ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर। ऐसे न लौकिक को न पारलौकिक को कहेंगे। अभी ऐसे ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर से वर्सा मिलता नहीं है। यह बातें बाप बैठ समझाते हैं। भक्ति-मार्ग की तो बात ही न्यारी है। भक्ति माना दुगर्ति। ड्रामा में वह भी पार्ट है। जो फिर चलता रहता है। बाप बतलाते हैं कैसे तुम ने 84 जन्म लिये हैं। 84 लाख नहीं हैं। यह तो बहुत बड़ा गपोड़ा है। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में जो कुछ सुना है वह सभी रांग है। बाप भगवान सारी दुनिया और हम को राईटस बनाते हैं। इस समय सभी हैं अनराईटियस अधर्मी। सभी अधर्म करते हैं ना। धर्मात्मा कोई बनता नहीं हैं। पूण्यात्माओं की दुनिया ही दूसरी, पापात्माओं की दुनिया ही दूसरी। जहां पापात्मायें रहती हैं वहा पूण्यात्मायें नहीं रहती। पापात्मायें पापात्माओं को दान पूण्य आद करते हैं। पूण्यात्माओं की दुनिया में तो दान पूण्य आद करने की दरकार ही नहीं। वहां यह ज्ञान नहीं रहता हैकि हम ने 84×2। जन्मों का वर्सा लिया है। नहीं। यह ज्ञान यहां ही है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सो भी 21 जन्मों लिए। सदा सुख, हेल्थ-वेल्थ सभी मिल जाता है। वहां तुम्हारी आयु भी बड़ी रहती है। नाम ही है अमरपुरी। कहते हैं शंकर ने पार्वती को कथासुनाई। परन्तु सूक्ष्मवतन में तो यह बातें होती नहीं। सो भी अमर कथाएक को थोड़े ही सुनाई जाती। यह सभी भक्ति मार्ग के गपोड़े हैं। जिस पर अभी तक खड़े हैं। सब से बड़ा गपोड़ा है ईश्वर को सर्वव्यापी कहना। यह ग्लानी क्रीस करते हैं ना। कितनाबड़ा पाप है। बेहद का जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनके लिए कहते हैं सर्वव्यापी है ठिक्कर भित्तर में है। कण2 में हैं। अपने से भी जाती ग्लानी कर दी। पूरा मैं तुम्हारा कितना निष्काम सेवा करता हूं। मुझे कुछ भी लोभ आद नहीं है कि पहले नम्बर में बनूं। नहीं। औरों को बनाने का रहता है। इसको कहा जाता है निष्काम सेवा। अपना कुछ भी न रखना। इसलिए तुम बच्चों को नमस्ते करते हैं। वह है निराकारी निरअहंकारी। कोई भी अहंकार नहीं। कपड़े आद भी वही हैं। कुछ भी बदला नहीं हैं। नहीं तो वह लोग सारी ड्रेस बदली करते हैं। आफिसर लोग भी बदलाते हैं। प्रेजीडेन्ट प्राईम मिनिस्टर आद भी ड्रेस बदलते हैं। इनका तो वही साधारण तन हैं। साधारण पहिरवाईस है कोई फर्क नहीं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन लेता हूं। वहभी कौन सा? जो खुद ही अपने जन्मों को नहीं जानते हैंकि हमने कितने पुनर्जन्म लिये हैं। वह तो 84 लाख कह देते हैं। सुनी सुनाई बातें हैं ना। गरुड़ पुराण में भी दिखाते हैं जनावर आद क्या2 बनते हैं। बापकहते हैं यह सभी हैं रोचक बातें। इससे फायदा

भाग. २ ३८ १९८

30/8/85

कुछ नहीं। डराते हैं। ऐसा काम किया तो गदहाबनेंगे। यह बनेंगे। गाय की पूंछपकड़नेलिए भी कहते हैं। अभी गाय कहां जावेंगो जिसका पूंछ पकड़ेंगे। स्वर्ग की तो गईयां हो अलग होती है। वहां की गईयां बड़ी फर्स्ट क्लास होती है जैसे तुम 100% सम्पूर्ण, गईयां भी ऐसे बहुत फर्स्ट क्लास होती है। जिसको कपोला कामधेनू धेनू कहते हैं। जैसेतुम फर्स्ट क्लास वैसे कृष्ण कीगईयांभी फर्स्ट क्लास होती है। कृष्ण कोई गईयां चराते नहीं है। उनको क्यादरकार पड़ी है। यह ब्युटी दिखाते हैं किवहां जनावर भी फर्स्ट क्लास होती है। वहां के लिए तो कामन बात है। जैसे राजाओं के पास कोई अच्छी चीज़ कामन होती है। वहां हर चीज़ फर्स्टक्लास होती है। बाकी ऐसे नहीं किकृष्ण कोई गउपाल है। कलेन्डरस आद में तो कृष्ण को धनार बना देते हैं। कृष्ण को नम्बरवन हिंसकबना दिया है। स्वदर्शनचक्र से सभी कागला काटा। अभी वह हिंसा थोड़े ही करेंगे। दिखाते हैं अकासुर बकासुर आद को मारते रहते हैं। बड़ी ही हिंसक बातें दिखाई है। और फिर दिखाते हैं 16108 रानियां थी। दूसरे धर्म वाले ऐसे ही बातें उठाते हैं। पादरी लोग भी हिन्दुओं को बैठ समझाते हैं। क्योंकि देवता धर्म तो अभी है नहीं। यह एक ही धर्म है जो प्रायः लोगप हो जाता है। यह बातें भी कोईशास्त्रों में नहीं हैं। बापकहते है यहज्ञान मैं बच्चों को ही देता हूंविश्व का मालिक बनाने लिए। मालिक बन गये फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। ज्ञान हमेशा ज्ञानियों को दिया जाता है। भक्ति है अंधियारा। इसलिए गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा... अभी बच्चे जानते हैं सारी दुनिया ही अंधियारे में है। कितने सत्संग आद करते हैं। यह भी सभी हैं भक्ति मार्ग के। यह कोई भक्ति नहीं है। यहतो है सदगति मार्ग। एक बाप ही सद गतिदाता है। तुम बच्चे भी भक्ति मार्ग में कहते होबाबाआप आवेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। दूसरा न कोईक्यों कि आप ही ज्ञान के सागर होसुख का सागर हो, पवित्रता का सागर हो। सम्पति का सागर भी हो। सम्पति भीदेते हो ना। तुमको कितना माला माल कर देते हैं। तुम जानते हो हम शिव बाबा से 21 जन्मों लिए झोली भरने हैं। अर्थातनर से नारायण बनते हैं। भक्ति मार्ग में कथाएं तो बहुत सुनते आये हैं। भक्ति माना हीदुर्गति। सीढ़ी नीचे ही उतरते हैं। चढ़ती कला कोई की हो न सके। कल्प की आयु भी कितनी लम्बी चौड़ी कह देते। अभी तुमको पता पड़ा है कल्प है ही 5000वर्ष का। मैक्सीमम है 84 मिनिमम है एक जन्म भी होता है। पीछे आते रहते हैं। निराकारी झाड़ है ना। फिर नम्बरवार आते हैं पार्ट बजाने। असल तो हम निराकारी झाड़ के हैं। फिर वहांसे आते हैं पार्ट बजाने। वहां सभी पवित्र ही रहते हैं। परन्तु पार्टसभी का अलग2 है। यह बुधि में रखो। झाड़ भी बुधि में रखो। सतयुग से कलियुग अन्त तक। यह बाप ने ही बताया है। यह कोई मनुष्य नहीं बताते। यह भी नहीं बताते हैं। एक ही सतगुरु है जो सर्व की सदगति करते हैं। बाकी तो सभी गुरु है भक्ति मार्ग के। कितने कर्मकाण्ड आद करते हैं। भक्ति मार्ग का शो कितना है। है रण्य के पानी मिशल। इसमें इतनाफंसे हैं तो कोई निकाल भी न सके। निकालने जाते हैं खुद भी फंस जाते हैं। बाबा जानते हैं बहुतब्राहमणियां भी बनती है औरों को दुवण से निकालने। फिर खुद भी फंस जाती। ऐसी फंसती है जो कब निकल भी न सके। ऐसे भी बहुत केसेस होते हैं। बाबा नाम नहीं लेते हैं नहीं तो नाम बदनाम हो जाये। क्योंकि दुश्मन भी बहुत है ना। यह भी सभी ड्रामा में नूंध है। नई बात नहीं। तुम्हारासेकण्ड व सेकण्ड जो कुछ होता है सारा ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारी बुधि में है अभी हम बेहद के बाप से राजयोग सीख नर से नारायण बनते हैं। विश्व का मालिक बनते हैं। तुम बच्चों को पहले तो यह नशा रहनाचाहिए। बेहद का 5000वर्ष बाद भारत में हो आते हैं। शान्ति का सागर है, सुख का सागर है यहमहिमा पारलौकिक बाप की है। तुम जानते हो यह महिमा तो बिलकुल ही ठीक है। सभी कुछ एक से ही मिलता है। वही सुख कर्ता दुःख हर्ता है। जिसके सामने तुम बैठे हो। तुम अपने2सेन्टर पर बैठे होंगे तोकहां योग लगावेंगे। बुधि में आवेगा शिव बाबा मधुवन में है। उनको ही याद करते हो। शिव बाबा

खुद कहते हैं मैं ने साधारण तन में प्रवेश किया है। फिर से स्वर्ग बनाने। मैं ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूं। तुम मेरी कितनी ग्लानी करते हो। मैं तो तुमको पूज्य बनाता हूं। कल की बात है। तुम कितनी पूजा करते थे। तुमको इतना राज-भाग दिया सभी गंवाये दिया। अभी फिर तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। कब किसके बुधि में नहीं होगा। यह है देवीगुणों वाले मनुष्य। है तो मनुष्य ना। 40-100फुट लम्बे तो नहीं हैं। ऐसे नहीं कि इन्हों को आयु बड़ी है इसलिए छत जितनी बड़े होंगे नहीं। कलियुग में तुम्हारी आयु कम हो जाती है। बाप आकर तुम्हारी आयु बड़ी करते हैं। इसलिए बाप कहते हैं हेल्थ मिनिस्टर को भी समझाओ। बोलो हम आप को ऐसी युक्ति अवतावें जो कब बिमार होना ही न पड़े। भगवानुवाच बच्चे अपने को आत्मा मामेकं याद करो तो तुम पतित से पावन, एवर हेल्दी बन जावेंगे। हम गैरन्टी करते हैं भारत में जब यह देवतायें थे तो इन्हों की आयु बहुत बड़ी थी। अभी भोगी बने हैं तो आयु भी कम हो गई है। योगी पवित्र होते हैं। तो आयु भी बड़ी होती है। अभी तुम राजऋषि हो। राजयोगी हो। वह सन्यासी तो कब राजयोग सिखाये न सके। वह कहते हैं गंगा पतित पावनी है। वहां दान करो। अभी गंगा में थोड़े ही दान किया जाता है। मनुष्य डालते हैं वहां पण्डे लोग बैठ रहते हैं झटपानी से पैसे निकाल लेते हैं। गंगा को थोड़े ही मिलता है। पंडित लोग ले जाते हैं। वह पतित पावनी गंगा समझ कर दान करते हैं। अभी तुम तो बाप द्वारा पावन बनते हो। बाप को देते हो क्या। नहीं। बाप तो दाता है ना। तुम भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ गरीबों को देते थे। गोया पतितों को देते थे। तुम भी पतित। लेने वाले भी पतित। तुम पावन बनते हो तो वहां किसको देने की बात ही नहीं होती। वह तो पतित पतित को दान करते हैं। कुमारी को दान देते हैं। वह भी पतित बनती हैं तो सभी के आगे जाकर सर झुकाना पड़ता है। जब कुमारी पावन है तो उनको आकर माथा टेकते हैं। खिलाते हैं दक्षिणा भी देते हैं। शादी के बाद बरबादी हो जाती है। ड्रामा में नूंध है। फिर भी ऐसा रिपीट होगा। भक्ति मार्ग का भी पास्ट हो गया। सतयुग का भी समचार बाप बताते हैं। तुम बच्चों को समझ पड़ी है। पहले बेसमझ थे। 100% बेसमझ। इसमें भी 100% बेसमझ उनको कहा जाता है जो सर्वव्यापी का ज्ञान सुनाते हैं। इसलिए ही बाप कहते हैं यदा यदाहि.... सर्वव्यापी का ज्ञान भी भारत में ही है। कहां से यह निकला? गीता से। अभी गीता कोई भगवान ने नहीं लिखली है। गीता लिखी है मनुष्यों ने। सभी शास्त्र है भक्ति मार्ग की गिरने की। मैं को कोई भी पाते नहीं। मैं जब आता हूं मैं ही आकर सदगति करता हूं सभी की। और मैं एक ही बार आकर पुरानी दुनिया को नई बना बनाता हूं। मैं गरीब निवाज़ हूं ना। गरीबों को ही शाहुकार बनाता हूं। शाहुकारों को गरीब क्यों कि गरीब तो झट बाप का बन जाते हैं। कहते हैं बाबा हम भी आप के हैं। यह यह सभी कुछ आप का है। बाप कहते हैं अच्छा ट्रस्टी होकर रहो। बुधि से समझो यह हमारा नहीं बाप का है। इसमें बड़ी सच्चाई चाहिए। फिर तुम घर में भोजन बना कर खाते रहो। गोया यज्ञ से खाते हो। क्योंकि तुम भी यज्ञ के, सभी कुछ यज्ञ के हो गया। घर में ट्रस्टी हो शिव बाबा के भण्डारे से खाते हो। परन्तु पुरा निश्चय चाहिए। निश्चय में गड़बड़ हुई तो हरिश्चन्द्र की कथा हो जावेगी। अमानत में खुयानत डाली बीच को तो सभी कुछ बताना समझाना है। बाप समझाते हैं मैं गरीब निवाज़ हूं। गीत भी है ना आखिर वह दिन आया आज जिस दिन का रास्ता तकते थे। आधा कल्प भक्ति मार्ग में याद करते आये। आखिर मिला। अभी भक्ति मुर्दाबाद, ज्ञान जिन्दा बाद होना है। सतयुग जरूर आना है। बीच में संगम युग। जिस में तुम उत्तम ते उत्तम पुरुष बनते हो। तुम पवित्र प्रवृति मार्ग वाले थे फिर 84 जन्मों बाद अपवित्र बनते हो। फिर पवित्र बनना है। कल्प पहले भी तुम ऐसे ही बने थे। कल्प पहले भी जितना जिसने पुरुषार्थ किया है वह करेंगे। अपना वर्सा लेंगे। साक्षी हो देखते रहो। बाप कहते हैं तुम मैसेन्जर हो। और तो मैसेन्जर पैगम्बर होते नहीं। जो भी आते हैं गुरु लोग तो है नहीं। सदगुरु सिर्फ एक ही हैं। बाकि को गुरु क्यों कहते हैं। गुरु तो सदगति

करनेवाला एक ही है। वह (नानक) तो आया सिर्फ अपने धर्म की स्थापना करने तो गुरु कैसे ठहरे। सभी दुर्गति मे ही पड़े हैं। बाप कहते हैं मै उन सभी की सदगतिदेता हूं। क्राईस्ट भी बहुत जन्मों के अंत में यहां ही है। तुम्हारे जितने जन्म तो वह लेते नहीं हैं। पिछाड़ी तक छोटे टास्टारियां आद निकलते रहते हैं। तो वह छोटे 2 गुरु बन पड़े हैं। उन्हों की कितनी महिमा है। नये2 जो आते हैं वह कितने गुरु बन जाते हैं। गद्दियां पकड़ लेती हैं। बाप कहते हैं मै आकर सर्व की सदगति करता हूं। गीता भी है सर्व शास्त्रमई शिरोमणि भारत भी सर्व खण्डों से श्रेष्ठ है। सच्च खण्ड भी उनको कहा जाता है। जो फिर झूठ खण्ड बनता है। अभी फिर और सभी खण्डों का विनाश हो जावेगा। भारत भी झूठ खण्ड है ना। अपने धर्म को ही नहीं जानते। ड्रामा में यह भी नूंध है। अनेक धर्म का विनाश एक धर्म की स्थापना। इसमें भारत भी आ जाता है। देवी देवता धर्म वाले ही अभी कर्म-भ्रष्ट, धर्म-भ्रष्ट बन गये हैं। पहले पावन फिर पतित बन जाते हैं। अपन को देवीदेवता कह नहीं सकते। पवित्र पूज्य से अपवित्र पुजारी बन पड़े हैं। फिर सो पूज्य बनते हैं। 84 जन्मों की समझानी है। इतना समय हम उतरते आये हैं। इसलिए सीढ़ी बनाई है। सारी दुनिया की उतरती होती है फिर चढ़ती कला होती है। चढ़ती कला तो हेविन, उतरती कला तो हेल। यह चित्र तो छोटे बच्चों को समझाने लिए बनाई है। बनाई भी देखो कैसे हैं। बच्चों को सा0 कराते गये खुद बैठ चित्र बनाये। यह चित्र बनाओ, यह कैच करो। विनाश काले बिप्रीत बुधि का चित्र समझाओ। डरो मत। कई तुमको कहते हैं तुम हमको कोड़व क्यों कहते हो। अरे यह तो अर्थ है। कुरु का अर्थ है कोड़व। अंग्रेजी में कांग्रेस कहते हैं। इसमें मुंझने की तो दरकार नहीं। यह तो गीता में भी लिखा हुआ है। विनाश काले बिप्रीत बुधि। बिप्रीत बुधि माना दुश्मनी। सदगति करने वाले बाप कोकह देते ठिक्कर, भित्तर में है। कितनी दुश्मनी। बाप कहते हैं जब ऐसी हालतें होती हैं, कलह ऐसी हालत होती है। फिर बाप आकर तुमको राजयोग सिखलाते हैं। राजयोग और कब कोई कोई सिखलाये न सके। भगवानुवाच ही है मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूं। यह (ल0ना0) राजा-रानी है। जिनको विश्व का मालिकबनाया वही फिर 84 जन्मों बाद फिर रंक बन जाते हैं। फिर राव बनाते हैं। इनकी आत्मा रंक बनी है फिर रंक से राव बन रही है। कितनी सहज बात है। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं तो फिर और कोई पढ़ाई पढ़ कर क्या बनेंगे। उस पढ़ाई की प्रारब्ध तो भोग न सके। विनाश हो जावेगा। बच्चे पैदा कर भी क्या करेंगे। वर्सा तो लेंगे नहीं। फिर ऐसे बच्चे पैदा करने की दरकार ही क्या है। इसलिए बाप कहते हैं विकार छोड़ दो। शास्त्रों में लिख दिया है शंकर पार्वती पिछाड़ी फिदा हुआ। फिर वीर्य गिर गया... भक्ति मार्ग में ऐसी2 बातें सुनी है परन्तु ऐसे तो है नहीं। फिर भी यही बातें सुनेंगे। तुम भी भक्त थे ना। अभी तो बाप से वर्सा लेना है। बाप शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर, सम्पति का सागर है। सागर से रत्नों की थालियां भरकर देते हैं। सागर से यह नदियां निकलती हैं ना। तुम भी सागर से निकले हो। ज्ञान की रत्न देते हो। परन्तु लेने वाले, धारण करने वाले भी हो ना। बहुत अच्छा2 भी कहते हैं। आप का ज्ञानबहुत अच्छा है। हम भी काम उतार कर आवेंगे। बाबातो कहते हैं यहोसे गया और खलास। जैसे गर्भ जेल से इन्जाम करते हैं फिर भूल जाते हैं। पापात्मायें तो रहते हैं ना तो उन्हों के लिए फिर जेल आद सभी यहां हैं। वहां तो यह बातें ही नहीं। वह है स्वर्ग। तुमने अनेकवार स्वर्ग के सुख देखे हैं। बाप ने स्मृति दिलाई है। कितना बार तुम ने ज्ञान सुना होगा। तुम विश्व के मालिक बने हैं होंगे। अभी होवेगर। बेगर टू प्रिन्स। यह चक्र चलता रहता है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई। यह बाप ही समझाते हैं। जो नई दुनिया स्थापन करते हैं वही तो समझावेंगे ना। परम पिता परमात्मा प्रजापिता ब्रहमा द्वारा स्थापन करते हैं। और कोई को पता नहीं है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-::-शिव बाबा याद है?-::-